

विषय सूची

| | पृष्ठ |
|--|----------------|
| पहिलो अध्याय: शोध कार्यको परिचय | (१-२१) |
| १.१ शोध प्रबन्धको शीर्षक | १ |
| १.२ समस्याकथन | १-२ |
| १.३ शोध प्रबन्धको उद्देश्य | २-३ |
| १.४ शोध प्रबन्धको सीमा र क्षेत्र | ३-४ |
| १.५ पूर्वकार्यको समीक्षा | ४-१३ |
| १.६ शोध शीर्षकको औचित्य | १३ |
| १.७ शोध विधि | १३ |
| १.७.१ सामग्री सङ्कलन विधि | १३-१४ |
| १.७.२ सैद्धान्तिक ढाँचा एवम् विश्लेषण र साधारणीकरण | १४-१५ |
| १.८ शोध प्रबन्धको सङ्गठन | १५-१६ |
| १.९ शोध कार्यको मुख्य निष्कर्ष | १६-२१ |
| १.१० भावी शोधकर्तालाई सुझाव | २१ |
| | |
| दोस्रो अध्याय: तुलसी 'अपतन'—को जीवनी र व्यक्तित्व | (२२-४८) |
| २.१ जन्म | २२ |
| २.२ पुर्ख्यौली | २२-२३ |
| २.३ बाल्यकाल र शिक्षा—दीक्षा | २३-२५ |
| २.४ ब्रतबन्ध एवम् विवाह | २५-२६ |
| २.५ पारिवारिक जीवन | २६ |
| २.६ व्यक्तित्व | २७ |
| २.६.१ शिक्षकको व्यक्तित्व | २७-२८ |
| २.६.२ साहित्यिक व्यक्तित्व | २८-४३ |
| २.७ रूचि | ४३-४४ |
| २.८ मान, सम्मान, पदवी | ४४-४७ |
| २.९ निष्कर्ष | ४७-४८ |

तेस्रो अध्याय: नेपाली साहित्यको विकासमा तुलसी 'अपतन'—ले

| | गरेका साङ्गठनिक कार्यहरू | (४९-८४) |
|-------|--|---------|
| ३.१ | तुलसी 'अपतन' र 'अपतन साहित्य परिषद', सिक्किम | ४९ |
| ३.१.१ | अपतन साहित्य परिषदका पृष्ठभूमिहरू | ४९-५८ |
| ३.१.२ | अपतन साहित्य परिषदको स्थापना | ५८-६० |
| ३.१.३ | अपतन साहित्य परिषदका सदस्यहरू | ६०-६१ |
| ३.१.४ | अपतन साहित्य परिषदको उद्देश्य र नियमावली | ६१-६३ |
| ३.२ | अपतन साहित्य परिषदका कार्यहरू | ६३-६५ |
| ३.२.१ | तुलसी 'अपतन' र अपतन साहित्य परिषद | ६६-६९ |
| ३.३ | तुलसी 'अपतन' र नेपाली साहित्य सम्मेलन | ६९ |
| ३.३.१ | दार्जीलिङमा नेपालीहरूको बसोबासो | ६९-७० |
| ३.३.२ | दार्जीलिङमा नेपाली भाषाको प्रयोग र पठन-पाठन को शुरु | ७०-७२ |
| ३.३.३ | नेपाली साहित्य सम्मेलनको पूर्ववर्ती र समकालीन भारतीय नेपाली साहित्यको गतिविधि | ७३-७४ |
| ३.३.४ | नेपाली साहित्य सम्मेलनको स्थापना | ७४-७५ |
| ३.३.५ | नेपाली साहित्य सम्मेलनको उद्देश्य | ७५-७६ |
| ३.३.६ | नेपाली साहित्य सम्मेलनका कार्यहरू | ७६-७८ |
| ३.३.७ | तुलसी 'अपतन' र नेपाली साहित्य सम्मेलन | ७८-८२ |
| ३.७ | निष्कर्ष | ८२-८४ |

चौथो अध्याय: तुलसी 'अपतन'—को काव्य—यात्रा र चरणगत

| | काव्य प्रवृत्ति | ८५-१३२ |
|-------|---|---------|
| ४.१ | तुलसी 'अपतन'—का काव्ययात्राका चरणहरू | ८५-८६ |
| ४.२ | तुलसी 'अपतन'—का काव्य यात्राका चरणगत प्रवृत्तिहरू | ८६ |
| ४.२.१ | प्रथम चरणका कविता र चरणगत प्रवृत्तिहरू | ८६-८९ |
| | (क) शास्त्रीयवादी प्रवृत्तिहरू | ८९-९४ |
| | (ख) स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तिहरू | ९४-१०१ |
| | (ग) समाजबोधको भाव | १०१-१०५ |
| ४.२.२ | दोस्रो चरणका कविता र चरणगत प्रवृत्तिहरू: | १०६-१०७ |
| | (क) स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तिहरू | १०७-११४ |
| | (ख) आधुनिकतावादी प्रवृत्तिहरू | ११४-१२१ |
| ४.२.३ | तेस्रो चरणका कविताका प्रवृत्तिहरू | १२१-१२२ |
| | (क) आधुनिकतावादका प्रवृत्तिहरू | १२२-१३२ |
| ५.४ | निष्कर्ष | १३२ |

पाँचौं अध्याय : तुलसी 'अपतन'—का प्रमुख काव्य कृतिहरूको

| | |
|---------------------------------------|---------|
| विश्लेषणात्मक अध्ययन | १३३-२७० |
| ५. विश्लेषणका आधारहरू | १३३ |
| ५.१ इन्द्रकील पुष्पाञ्जलि (सन् १९५०) | १३३-१३४ |
| ५.१.१ आयाम एवम् संरचना स्वरूप | १३४ |
| ५.१.२ भाव वा विषयवस्तु | १३५-१४३ |
| ५.१.३ भाषा शैली | १४३-१४५ |
| ५.१.४ छन्द र लय विधान | १४५-१४७ |
| ५.१.५ प्रतीक, बिम्ब र अलङ्कारको योजना | १४७-१५० |
| ५.१.६ शीर्षकको औचित्य | १५०-१५२ |
| ५.१.७ कवित्वको स्तर | १५२ |
| ५.१.८ निष्कर्ष | १५३ |
| ५.२ बापू बन्दना (खण्डकाव्य), सन् १९५२ | १५४-१६२ |
| ५.२.१ आयाम एवम् संरचना स्वरूप | १५४-१५५ |
| ५.२.२ भाव वा विषयवस्तु | १५५-१५७ |
| ५.२.३ भाषा-शैली | १५७-१५८ |
| ५.२.४ छन्द वा लयविधान | १५८-१५९ |
| ५.२.५ विम्ब र अलंकार योजना | १५९-१६० |
| ५.२.६ रस | १६०-१६१ |
| ५.२.७ शीर्षकको औचित्य | १६१ |
| ५.२.८ कवित्वको स्तर | १६१ |
| ५.२.९ निष्कर्ष | १६२ |
| ५.३ संकल्प (कविता सङ्ग्रह), सन् १९५६ | १६३-१७३ |
| ५.३.१ आयाम एवम् संरचना | १६३-१६४ |
| ५.३.२ भाव वा विषयवस्तु | १६४-१६८ |
| ५.३.३ भाषा शैली | १६८ |
| ५.३.४ छन्द वा लय विधान | १६९ |
| ५.३.५ प्रतीक, विम्ब र अलंकार योजना | १७०-१७१ |
| ५.३.६ रस | १७२ |
| ५.३.७ शीर्षकको औचित्य | १७२ |

| | |
|--|---------|
| ५.३.८ कवित्वको स्तर | १७२-१७३ |
| ५.३.९ निष्कर्ष | १७३ |
| ५.४ के होला? (कविता सङ्ग्रह), सन् १९५९ | १७४-१८९ |
| ५.४.१ आयाम एवं संरचना-स्वरूप | १७५ |
| ५.४.२ भाव वा विषयवस्तु | १७५-१८० |
| ५.४.३ भाषा-शैली | १८०-१८३ |
| ५.४.४ छन्द वा लय विधान | १८३-१८५ |
| ५.४.५ प्रतीक, विम्ब र अलंकार योजना | १८५-१८७ |
| ५.४.६ रस | १८७-१८८ |
| ५.४.७ शीर्षकको औचित्य | १८८ |
| ५.४.८ कवित्वको स्तर | १८८ |
| ५.४.९ निष्कर्ष | १८९ |
| ५.५ नहेर आज मलाई (कविता सङ्ग्रह), सन् १९७६ | १९०-२१२ |
| ५.५.१ आयाम एवम् संरचना-स्वरूप | १९०-१९१ |
| ५.५.२ भाव वा विषयवस्तु | १९१-२०३ |
| ५.५.३ भाषा-शैली | २०३-२०४ |
| ५.५.४ छन्द वा लयविधान | २०४-२०७ |
| ५.५.५ प्रतीक, विम्ब, अलङ्कार योजना | २०७-२१० |
| ५.५.६ रस | २१०-२११ |
| ५.५.७ शीर्षकको औचित्य | २११ |
| ५.५.८ कवित्वको स्तर | २११ |
| ५.५.९ निष्कर्ष | २१२ |
| ५.६ कर्ण-कुन्ती (खण्डकाव्य), सन् १९८८ | २१३-२४४ |
| ५.६.१ आयाम एवम् संरचना-स्वरूप | २१३-२१५ |
| ५.६.२ विषयवस्तु एवम् भावविधान | २१६-२३३ |
| ५.६.३ भाषा-शैली | २३४-२३६ |
| ५.६.४ छन्द र लय विधान | २३६-२३७ |
| ५.६.५ विम्ब, अलङ्कार योजना | २३७-२३९ |
| ५.६.६ रस | २३९-२४२ |
| ५.६.७ नामकरणको औचित्य | २४२ |
| ५.६.८ कविताको स्तर | २४२-२४३ |
| ५.६.९ निष्कर्ष | २४३-२४४ |

| | |
|---|---------|
| ५ : ७ बुद्धिबॅंगारो (मिनी खण्डकाव्य-संग्रह), सन् १९९३ | २४५-२७० |
| ५.७.१ आयाम एवम् संरचना स्वरूप | २४५-२४६ |
| ५.७.२ भाव तथा विषय वस्तु | २४६-२५७ |
| ५.७.३ भाषा-शैली | २५८-२६१ |
| ५.७.४ छन्द वा लय विधान | २६१-२६२ |
| ५.७.५ प्रतीक, विम्ब अनि अलंकार योजना | २६२-२६६ |
| ५.७.६ रस | २६६-२६७ |
| ५.७.७ शीर्षकको औचित्य | २६७-२६८ |
| ५.७.८ कवित्वको स्तर | २६८-२६९ |
| ५.७.९ निष्कर्ष | २६९-२७० |

छैटौं अध्याय : उपसंहार र निष्कर्ष

| | |
|--------------|---------|
| ६.१ उपसंहार | २७१-२७९ |
| ६.२ निष्कर्ष | २७७-२७८ |
| | २७४-२७९ |

परिशिष्ट

- (क) प्रमुख सन्दर्भ ग्रन्थ
(ख) प्रमुख सन्दर्भ पत्र-पत्रिका